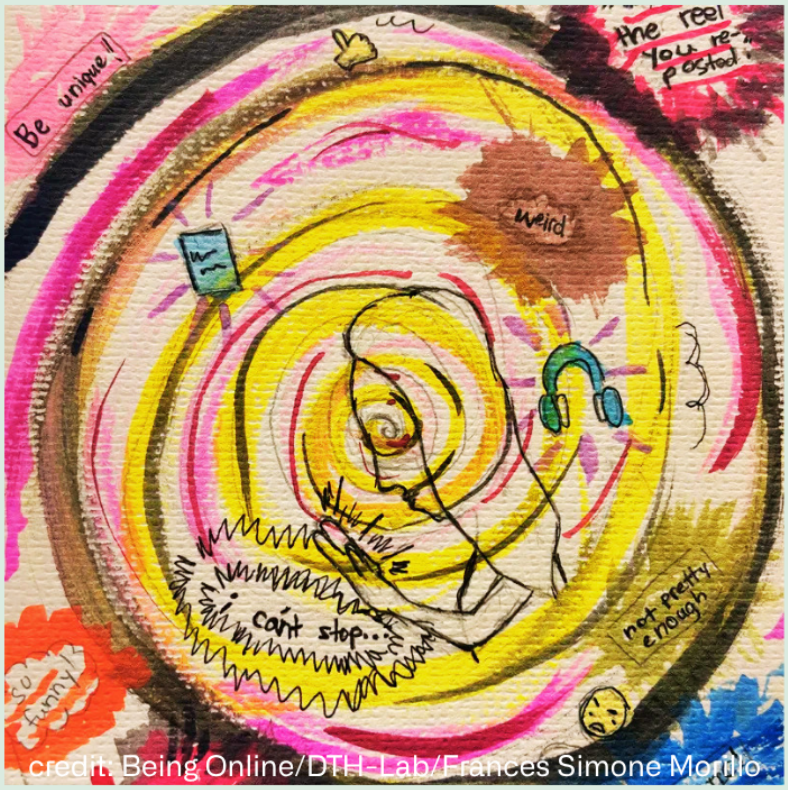
THE LANCET

DIGITAL TRANSFORMATIONS FOR HEALTH LAB
GOVERNING HEALTH FUTURES 2030

स्वास्थ्य के डिजिटल निर्धारकों पर *द लैंसेट* शृंखला



कार्यकारी सारांश

डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ अब उन व्यवस्थाओं और परिवेशों का अभिन्न अंग बन चुकी हैं जो स्वास्थ्य और कल्याण को आकार देते हैं। वे इस बात को प्रभावित करती हैं कि लोग जानकारी तक कैसे पहुँचते हैं, संवाद कैसे करते हैं, सीखते और काम करते हैं, स्वास्थ्य सेवाएँ कैसे प्राप्त करते हैं, समाज में कैसे भाग लेते हैं और अपने जीवन से जुड़े निर्णय कैसे लेते हैं। इसलिए डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ अब केवल मौजूदा सामाजिक व्यवस्थाओं के भीतर इस्तेमाल होने वाले साधन भर नहीं रह गई हैं; वे स्वयं स्वास्थ्य को निर्धारित करने वाली परिस्थितियों का हिस्सा बन चुकी हैं।

द लैंसेट की यह शृंखला स्वास्थ्य के डिजिटल निर्धारकों (Digital Determinants of Health; DDoH) का विश्लेषण करती है अर्थात वे तरीके, जिनसे डिजिटल माध्यमों से संचालित अवसंरचना, व्यावसायिक मॉडल, अभिकल्प संबंधी विकल्प, सूचना-परिवेश और शासन-व्यवस्थाएँ स्वास्थ्य परिणामों को प्रभावित करती हैं। शृंखला का तर्क है कि डिजिटल रूपांतरण व्यापक स्तर पर स्वास्थ्य के निर्धारकों को तीव्रता से नया रूप दे रहा है। इससे स्वास्थ्य सुधारने के नए अवसर पैदा हो रहे हैं, लेकिन साथ ही नए जोखिम और असमानताएँ भी जन्म ले रही हैं। इसलिए इन निर्धारकों को समझना और उनका समुचित नियमन करना जनस्वास्थ्य की एक अत्यावश्यक प्राथमिकता बन गया है।

इस शृंखला के तीनों शोधपत्र अनेक देशों के विविध विषयों के विशेषज्ञों के एक समूह ने लिखे हैं। ये शोधपत्र स्वास्थ्य के डिजिटल निर्धारकों को समझने और उनसे निपटने के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं तथा भावी अनुसंधान, व्यावहारिक कार्य और शासन के लिए एक महत्वाकांक्षी कार्यसूची निर्धारित करते हैं।

डिजिटल स्वास्थ्य-निर्धारकों को समझने के लिए एक नई वैचारिक आधारभूमि

शृंखला का कहना है कि डिजिटल प्रौद्योगिकियों को केवल अलग-अलग साधनों के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यापक डिजिटल सामाजिक-तकनीकी व्यवस्था के अंग के रूप में समझा जाना चाहिए ऐसी व्यवस्था, जो उन परिस्थितियों को आकार देती है जिनमें स्वास्थ्य का निर्माण होता है। शृंखला का पहला शोधपत्र स्पष्ट करता है कि यह व्यवस्था राजनीतिक मानदंडों, आर्थिक तर्क, डिजिटल अवसंरचना तथा सामाजिक और व्यक्तिगत व्यवहारों के परस्पर प्रभाव से निर्मित होती है। ये सभी शक्तियाँ मिलकर तय करती हैं कि डिजिटल प्रौद्योगिकियों की अभिकल्पना कैसे की जाती है, उन्हें किस प्रकार लागू और इस्तेमाल किया जाता है तथा उनका नियमन कैसे होता है और फलतः वे स्वास्थ्य को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

शोधपत्र इस बात पर बल देता है कि आज की डिजिटल व्यवस्थाएँ स्वास्थ्य के अनेक सुस्थापित निर्धारकों को तेजी से प्रभावित कर रही हैं। इनके प्रभाव केवल व्यक्तिगत उपयोगकर्ताओं तक सीमित नहीं हैं, क्योंकि डिजिटल अवसंरचना, मंच और डेटा-प्रणालियाँ अब संस्थाओं, बाजारों, सार्वजनिक सेवाओं, सामाजिक संबंधों और सूचना-परिवेश को भी आकार देती हैं। इसलिए डिजिटल रूपांतरण का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर पड़ता है उन लोगों पर भी, जो डिजिटल प्रौद्योगिकियों से बहुत कम प्रत्यक्ष रूप से जुड़ते हैं।

DDoH की रूपरेखा विशिष्ट प्रौद्योगिकियों से ध्यान हटाकर स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली व्यापक व्यवस्थाओं की ओर ले जाती है। यह रेखांकित करती है कि डिजिटल रूपांतरण के प्रभाव सत्ता-संबंधों, व्यावसायिक प्रोत्साहनों, शासन-व्यवस्थाओं और सामाजिक मूल्यों से आकार लेते हैं। इस दृष्टिकोण से डिजिटल साधन और परिवेश केवल उनके इस्तेमाल के कारण ही जनस्वास्थ्य की चिंता का विषय नहीं हैं, बल्कि उन अंतर्निहित संरचनात्मक परिस्थितियों के कारण भी हैं जिनके माध्यम से वे संचालित होते हैं।

एक मिश्रित भौतिक-डिजिटल संसार में बच्चों और किशोरों का स्वास्थ्य: एहतियाती जनस्वास्थ्य कार्रवाई की आवश्यकता

शृंखला का दूसरा शोधपत्र DDoH की रूपरेखा को समकालीन जनस्वास्थ्य के सर्वाधिक विवादास्पद मुद्दों में से एक पर लागू करता है: बच्चों और किशोरों के स्वास्थ्य और कल्याण पर डिजिटल मीडिया के उपयोग का प्रभाव।

यह शोधपत्र उपलब्ध साक्ष्यों के संभावित जनस्वास्थ्य निहितार्थों का परीक्षण करता है और साथ ही उन पहलुओं की भी पड़ताल करता है, जिनके संदर्भ में युवाओं के स्वास्थ्य पर डिजिटल परिवेश के प्रभाव अभी तक पर्याप्त रूप से समझे नहीं गए हैं। डिजिटल मीडिया का उपयोग लाभ और हानि दोनों से जुड़ा हो सकता है, फिर भी स्वास्थ्य के अनेक क्षेत्रों में प्रतिकूल परिणाम अपेक्षाकृत अधिक निरंतरता से दर्ज किए गए हैं। उदाहरण के लिए, प्रतिरूपण-आधारित आकलन संकेत देते हैं कि डिजिटल मीडिया के उपयोग और प्रतिकूल परिणामों के बीच मामूली संबंध भी जनसंख्या स्तर पर एक भारी बोझ में बदल सकता है, क्योंकि बच्चों और किशोरों में इसका उपयोग अत्यंत व्यापक है। यद्यपि ये अनुमान कारण-कार्य संबंध सिद्ध नहीं करते, फिर भी वे यह स्पष्ट करते हैं कि व्यक्तिगत स्तर पर छोटे प्रभाव भी जनसंख्या के स्वास्थ्य के लिए एक बड़ी चिंता का विषय बन सकते हैं।

शोधपत्र यह तर्क भी देता है कि मौजूदा साक्ष्य प्रायः डिजिटल परिवेश में युवाओं के वास्तविक जीवन-अनुभवों को पर्याप्त रूप से अभिव्यक्त नहीं करते। ये अनुभव मंचों की अभिकल्पना, एल्गोरिदम-आधारित अनुशंसा प्रणालियों, डेटा-संग्रह की पद्धतियों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के साधनों, व्यावसायिक प्रोत्साहनों और उन सामाजिक संदर्भों से आकार लेते हैं जिनमें डिजिटल मीडिया का उपयोग होता है। परिणामस्वरूप, स्वास्थ्य परिणामों को सबसे अधिक प्रभावित करने की संभावना रखने वाली अनेक प्रक्रियाएँ अब भी पर्याप्त रूप से समझी नहीं गई हैं।

DDoH की रूपरेखा लागू करने से ध्यान व्यक्तिगत व्यवहार से हटकर उन व्यापक व्यवस्थाओं और संरचनाओं पर केंद्रित होता है जो युवाओं के डिजिटल अनुभवों को आकार देती हैं। डिजिटल मीडिया के सर्वव्यापी उपयोग, देखे गए प्रतिकूल प्रभावों की निरंतरता, जनसंख्या स्तर पर व्यापक असर की संभावना और संवेदनशील समूहों में जोखिमों के अधिक संकेंद्रण को देखते हुए, शोधपत्र का निष्कर्ष है कि साक्ष्य अधूरे होने के बावजूद एहतियाती जनस्वास्थ्य कार्रवाई उचित है। इसमें मापन-पद्धतियों को बेहतर बनाना, मंचों से संबंधित अनुसंधान और आँकड़ों की पारदर्शिता तथा उन तक पहुँच बढ़ाना, अनुसंधान और नीतिगत प्रक्रियाओं में युवाओं की अधिक सार्थक भागीदारी सुनिश्चित करना तथा उभरती प्रौद्योगिकियों के प्रभावों पर अधिक ध्यान देना शामिल है।

स्वास्थ्य के डिजिटल निर्धारकों का शासन

तीसरे शोधपत्र का तर्क है कि डिजिटल शासन के मौजूदा दृष्टिकोण बिखरे हुए हैं और डिजिटल रूपांतरण के स्वास्थ्य संबंधी प्रभावों से निपटने के लिए अपर्याप्त हैं। डिजिटल परिवेश को आकार देने वाले अनेक कारक पारंपरिक जनस्वास्थ्य संस्थाओं के कार्यक्षेत्र से बाहर हैं, जबकि शासन की जिम्मेदारियाँ विभिन्न क्षेत्रों और अधिकार-क्षेत्रों में बँटी हुई हैं। इससे जवाबदेही और निगरानी में गंभीर कमियाँ उत्पन्न होती हैं।

शोधपत्र जनस्वास्थ्य के मूल्यों पर आधारित शासन-दृष्टिकोण का प्रस्ताव करता है। शासन का प्रमुख ध्यान केवल व्यक्तिगत जिम्मेदारी या बाद में सामने आने वाली हानियों पर नहीं होना चाहिए; उसे उन मूलभूत और पूर्ववर्ती निर्धारकों से निपटना चाहिए जो डिजिटल परिवेश को आकार देते हैं। इनमें डिजिटल अवसंरचना, मंचों की संरचना, डेटा-शासन प्रणालियाँ, व्यावसायिक प्रोत्साहन और जवाबदेही की व्यवस्थाएँ शामिल हैं।

बच्चों और युवाओं के स्वास्थ्य तथा ऑनलाइन सुरक्षा को बेहतर बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया है। वे विकास के अत्यंत महत्त्वपूर्ण चरणों में डिजिटल परिवेश के संपर्क में आते हैं और उन्हें अपेक्षाकृत अधिक जोखिमों का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए शोधपत्र अधिक सुदृढ़ सुरक्षा उपायों, व्यापक पारदर्शिता, बेहतर जवाबदेही और अधिक प्रभावी नियामक क्षमता की माँग करता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि डिजिटल प्रणालियों की अभिकल्पना और उनका शासन स्वास्थ्य तथा कल्याण की रक्षा करने वाले ढंग से हो।

डिजिटल प्रौद्योगिकियों की वैश्विक प्रकृति को स्वीकार करते हुए शोधपत्र अंतरराष्ट्रीय सहयोग और अधिक सुदृढ़ वैश्विक शासन की आवश्यकता पर भी बल देता है। DDoH से निपटने के लिए सरकारों, अंतरराष्ट्रीय संगठनों, शोधकर्ताओं, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र को मिलकर कार्य करना होगा। शोधपत्र स्वास्थ्य के क्षेत्र में डिजिटल और कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित रूपांतरणों के शासन के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के एक रूपरेखा अभिसमय का भी आह्वान करता है।

निष्कर्ष

पूरी शृंखला से एक साझा निष्कर्ष सामने आता है: वर्तमान डिजिटल सामाजिक-तकनीकी व्यवस्था वैश्विक जनस्वास्थ्य के लिए संरचनात्मक जोखिम उत्पन्न करती है, किंतु सुविचारित और उद्देश्यपूर्ण कार्रवाई के माध्यम से इसे बदला जा सकता है।

स्वास्थ्य के डिजिटल निर्धारकों की अवधारणा यह समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है कि वर्तमान व्यवस्था का विकास कैसे हुआ और वह लोगों के स्वास्थ्य को किस प्रकार प्रभावित करती है। यह इस बात पर बल देती है कि अनुसंधान, नीति और व्यवहार को पहुँच या व्यक्तिगत उपयोग जैसे सीमित सरोकारों से आगे बढ़ना होगा और डिजिटल जीवन को आकार देने वाली व्यवस्थाओं, प्रोत्साहनों, अवसंरचना और शासन-व्यवस्थाओं पर अधिक ध्यान देना होगा।

जैसे-जैसे डिजिटल रूपांतरण की गति बढ़ रही है, जनस्वास्थ्य संस्थाओं, सरकारों, शोधकर्ताओं, अंतरराष्ट्रीय संगठनों, नागरिक समाज और उद्योग सभी की यह सुनिश्चित करने में भूमिका है कि डिजिटल अवसंरचना और प्रणालियाँ स्वास्थ्य, समानता, मानवाधिकार और कल्याण को आगे बढ़ाएँ। डिजिटल युग में स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करने के लिए केवल तकनीकी नवाचार पर्याप्त नहीं होगा; ऐसे डिजिटल परिवेश बनाने के लिए सुविचारित प्रयास भी आवश्यक होंगे, जिनमें वर्तमान और भावी पीढ़ियाँ स्वस्थ जीवन जी सकें, सीख सकें और फल-फूल सकें।

पूरी शृंखला यहाँ पढ़ें: https://www.thelancet.com/series-do/digital-determinants-of-health

स्वास्थ्य के डिजिटल निर्धारक क्या हैं?

यह शृंखला DDoH को उन संरचनात्मक परिस्थितियों के रूप में परिभाषित करती है, जिनके माध्यम से डिजिटल माध्यमों से संचालित अवसंरचना, व्यावसायिक मॉडल, अभिकल्प संबंधी विकल्प और सूचना-परिवेश स्वास्थ्य तथा कल्याण को प्रभावित करते हैं। इनमें वे सामाजिक व्यवस्थाएँ, व्यवहार और नियम शामिल हैं जिनके माध्यम से डिजिटल रूपांतरण संचालित होता है, और वे वैश्विक परिस्थितियाँ तथा मानवीय गतिविधियाँ भी, जिनके द्वारा स्वास्थ्य का निर्माण और वितरण होता है। अन्य संरचनात्मक निर्धारकों की तरह DDoH भी विभिन्न स्तरों पर सक्रिय सत्ता-संबंधों, आर्थिक शक्तियों और शासन-व्यवस्थाओं से आकार लेते हैं।

अस्वीकरण

यह हिंदी सारांश लेखकों द्वारा प्रस्तुत किया गया है और इसे प्राप्त रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इसकी सहकर्मी समीक्षा नहीं की गई है। *द लैंसेट* की संपादकीय प्रक्रियाएँ केवल इस शृंखला के मूल शोधपत्रों पर लागू की गई थीं। अनुवाद में हुई कोई भी त्रुटि अनजाने में हुई है। सर्वाधिक सटीक जानकारी के लिए पाठकों से मूल शोधपत्रों को देखने का विनम्र अनुरोध है।